**गुरु नानक – सबद २१**

**असंख नाव असंख थाव ॥**

**जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ४**

असंख नाव असंख थाव ॥
अगम अगम असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

**सार:** आध्यात्मिक शब्दों पर ध्यान भक्ति के गंभीर विवेक को खोल सकता है। विवेक को किताबी ज्ञान, अनुभवात्मक शिक्षा, आलोचनात्मक सोच और धैर्य के मिश्रण की आवश्यकता होती है। इसमें वह चेतना शामिल है जो विविधता में एकता की जागरूकता प्रदान करती है।

असंख नाव असंख थाव ॥
असंख्य पहचानें असंख्य क्षेत्रों में निवास करती हैं।

अगम अगम असंख लोअ ॥

अनंत की अतुलनीय विशालता को समझने की कोशिश।

असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥

यह खुलासा करती है कि असंख्य प्रकृति की विशालता का एक अंदाज़ा है।

अखरी नामु अखरी सालाह ॥

आध्यात्मिक शब्दों पर चिंतन करने से गहन ज्ञान प्राप्त हो सकता है जो श्रद्धा के योग्य है।

अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥

ज्ञान के माध्यम से प्राप्त अनुभूति के आधार पर, व्यक्ति अच्छे विचार को व्यक्त और विकसित करता है।

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥

ज्ञान के शब्द, जब बोले और लिखे जाते हैं, संजीवनी का काम करते हैं।

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥

एकता के साथ किसी के जुड़ाव को निर्धारित करने में विवेक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥

जो इस संगति को अपनाते हैं उन्हें चिंतन के माध्यम से ज्ञान प्राप्त होता है।

जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

सार्वभौमिक कानूनों की स्वीकृति के अनुसार इस संगति को नियुक्त और प्राप्तकिया जा सकता है।

जेता कीता तेता नाउ ॥

सर्वव्यापक चेतना ही समस्त सृष्टि की रचयिता है; इसकी सर्वव्यापकता चिंतन के योग्य है।

विणु नावै नाही को थाउ ॥

एकता पर गहरे चिंतन के बिना कोई अन्य सक्षम स्थान नहीं है।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

प्रकृति में विविधता की शक्ति को कैसे समझा जा सकता है?

वारिआ न जावा एक वार ॥

इसकी विशालता को एक पल के लिए भी समेटा नहीं जा सकता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो कुछ भी प्रकृति के नियमों द्वारा निर्धारित है वह सार्वभौमिक कल्याण के लिए उत्कृष्ट है।

तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

सर्वव्यापी चेतना अनंत और निराकार है। (१९)

**तत्त्व:** गुरु नानक कहते हैं कि विविधता में एकता के सार्वभौमिक नियम की शक्ति को समझने, आत्मसात करने और स्वीकार करने को पूर्णतः सम्मिलित नहीं किया जा सकता है।

---


सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** [OnenessInDiversity.com](OnenessInDiversity.com)

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**